आमने-सामने

जुग-जुग जियेसु ललनवा

शशिकला राय

मुझे लक्ष्मी त्रिपाठी के बारे में लिखना है, देवदार की ऊंचाई-सी, रंग और गौरव से भरी, तितली की तरह फर्र-फर्र उड़ती, महुए की गंध की तरह गमकती। टी.वी. स्क्रीन उसके चेहरे की मासूमियत सोख लेती है। इतिहास ने 'बृहन्नला' में अर्जुन देखा था। यह 'अर्जुन' में 'बृहन्नला' है। शापित नहीं है। अपने मन से जीती है।

"बचपन से ही मैं किन्नर समुदाय के प्रति रोमांच ही नहीं बल्कि कशिश भी महसूस करती हूं। बड़े सारे किन्नर मेरे मित्र हैं।"

गहरे आवेश के साथ एक आंदोलन की तरह लक्ष्मी मौजूद रहना चाहती है। मैंने लक्ष्मी को सुना है, लक्ष्मी के बारे में सुना है। कैसे मिलूं इससे? खैर थोड़ी जद्दोजेहद के बाद लक्ष्मी से मिलने का सौभाग्य मुझे मिल ही गया।

अगले दिन ग्यारह बजे, कॉफ़ी कैफ़े डे में बैठी हूं। बेचैन और असहज हूं। अभिजात्य 'कैफे डे' में एक किन्नर के साथ बैठना? क्या कहेंगे लोग? इसी उधेड़बुन में थी कि सामने लक्ष्मी खड़ी थी— बल खाती, लहराती, जीन्स और टीशर्ट में कसी, छह फुट की लंबी-दुबली काया कंधे तक घुंघराले-छितराए बाल, छटपटाती मछली की तरह दो आंखें, होंठों पर गहरी मादक लिपिस्टिक। मैं हड़बड़ाहट में जब तक खड़ी होती हूं, तब तक टहनी सी लचीली बांहें मुझे घेर चुकी थीं, "हाय... देअर इज़ माई बच्चा।"

मुझसे बात नहीं हो पा रही। अटक-अटककर पूछती हूं। "मेरे कुछ मित्र मानते हैं कि आप लोग बदमाश होते हैं और आपराधिक गतिविधियों में भी...।" लक्ष्मी मेरी आंखों में ऐसे देखती है कि मैं बरबस नीचे देखने लगती हूं। "सुनो मेरी जान, आतंकवादियों की लिस्ट में कितने नाम हिजड़ों के हैं। घोटालों, भ्रष्टाचार और बलात्कार में? हां, एक बात और सच्चे हिजड़े किसी को जबरन हिजड़े भी नहीं बनाते। दो प्रतिशत बुरे लोगों के आधार पर आप सारे समाज का मूल्यांकन करेंगे? दैट इज़ नॉट फेअर।" मैं कहती हूं, "लक्ष्मी क्यों न हम तुम्हारे बचपन की ओर लौटें।" "हां, क्यों नहीं?"

"लक्ष्मी तुम बचपन में दूसरे बच्चों के साथ असहज महसूस करती थीं न?"

"हां। मैं पूरी तरह कटी-कटी ही रहती थी। क्योंकि मैं दमे की मरीज़ थी।" कैसे समझाऊं कि मैं जानना चाहती हूं, तुम सामान्य बच्चा नहीं थीं, तुम हिजड़ा बच्चा थीं। सो तुम्हारा अनुभव। शायद वह असमंजस भांप गई थी। लक्ष्मी ने कहा, "मेरा नाम लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी उर्फ राजू है और मैं बायोलॉजिकल मेल पैदा हुआ था। और जिस हिजड़े ने मेरे जन्म की बधाई ली वही बाद में मेरा गुरु बना।" मैं अवाक्। "लक्ष्मी तुम हिजड़ा नहीं पैदा हुए थे।" वह हंस पड़ी, "मैं मुंबई के मिठीबाई कॉलेज से बीकॉम

हूं।" यह युवक स्वेच्छा से हिजड़ा समुदाय में गया। असंभव। मेरा सिर चकरा गया। कोई हिजड़ा कैसे बनता है? मैं दो समानांतर दुनियाओं के बीच अपने को महसूस कर रही थी।

लक्ष्मी बाल्यकाल में ही अपनी कमनीयता और सौंदर्य के कारण पुरुषों के आकर्षण का केंद्र बन जाती थी। छठी-सातवीं तक जाते-जाते लक्ष्मी घोषित रूप से 'गे' हो चुकी थी। पहली बार घर के अत्यंत नज़दीकी व्यक्ति ने उसका शोषण किया। फिर चुप्पी और भय के बीच एक खुला और खाली मैदान-सी लक्ष्मी में सरपट दौड़ लगाने वालों की कमी नहीं। चौदह साल का 'गे'— पुरुषों का बार्बीडॉल। मैं कहती हूं, "लक्ष्मी मैं लिखूंगी तुम सोलह-सत्रह तक आते-आते 'गे' हो गई थीं।" "नहीं, इस उम्र तक मैं महामाया हो चुकी थी। तुम्हें उम्र में आगा-पीछा करने की ज़रूरत नहीं।" आज लक्ष्मी प्रतिबद्ध स्त्रीवादी है। लक्ष्मी के मन में विद्रोह अंकुरित होने लगा था। "तुम समझती हो मैं इकतीस की हूं पर सच्चाई यह है कि मेरा अनुभव कम से कम इकतीस पूरी जी गई ज़िंदगियों का है।

लक्ष्मी में बचपन से ही नृत्य के प्रति जुनून था, इसी जुनून ने इस छोटे से बालक को नृत्य का शिक्षक बना दिया। लक्ष्मी भरतनाट्यम में पोस्ट ग्रेजुएट है। कई फ़िल्मों और वीडियो अलबम में प्रोफेशनल कोरियोग्राफी की है। स्वयं की नृत्य की पाठशाला स्थापित की थी 'विद्यावर्धनी नृत्य पाठशाला'। मैं बीच में टोककर पूछती हूं, "लक्ष्मी, कभी किसी लड़की के प्रति कभी आकर्षण नहीं महसूस किया?" "बिलकुल नहीं। लड़कियों के लवलेटर भी मिले। न जाने क्यों मैं लड़कों के प्रति ही आसक्त होती थी।" लक्ष्मी को लड़के आते-जाते चिढ़ाते थे, उसके हाव-भाव को देखकर। लक्ष्मी अपने भीतर आत्मविश्वास की कमी महसूस करती थी। (लक्ष्मी भूल से भी अपने साथ था, करता हूं, कहता हूं नहीं लगाती जबकि उसके परिवार और उस समय के मित्र गलती से भी उसके लिए स्त्रीलिंग का प्रयोग नहीं करते)। मैं इस बात पर हैरान हो रही थी कि लोगों का रवैया लक्ष्मी के प्रति बेहद सम्मानजनक एवं प्रेमभरा था जबकि मैं बचपन से ही किन्नरों के प्रति समाज में अलग रवैया देखती आई थी। मेरा मन लक्ष्मी से बहुत कुछ सुनने के लिए बेताब था।

लक्ष्मी स्मृतियों से टूट-टूटकर जुड़ती है, और जुड़-जुड़कर टूटती है। कहती है, "बहुत से आत्मीय रिश्तों का कत्ल बचपन में ही हो गया था। और यह लोककथाओं में होने वाला कत्ल तो था नहीं कि यहां ख़ून गिरा तो आम का पेड़ उग आया। रिश्तों के जिन-जिन क्षेत्रों में ज़मीन बंजर हुई वहां न कुछ पनपना था न कुछ पनपा।" उसने स्कूल में दोस्ती हमेशा दबंग लड़कों से की ताकि चिढ़ाने वालों लड़कों से निजात पा सके।

लक्ष्मी ने स्कूली पढ़ाई खत्म करते ही 'मिठीबाई कॉलेज' में दाखिला लिया। यहां कोई लक्ष्मी से छेड़छाड़ नहीं करता था सो आत्मविश्वास बढ़ने लगा। लेकिन 'गे' की दुनिया में उसकी रूह तड़पती थी। ज़िंदगी पार्टी और सेक्स का पर्याय नहीं हो सकती। ज़िंदगी का मकसद इतना छोटा नहीं हो सकता। "मैं परिवार और समाज से अलग होकर भी उसी का हिस्सा हूं। उनसे पूरी तरह स्वयं को विच्छिन्न नहीं कर सकती। मेरी दुनिया कौन-सी है?" लक्ष्मी जीवन के सनातन प्रश्न से जूझ रही थी अस्तित्व की तलाश। जीवन से कुछ बहुमूल्य समाज को लौटा देने की तड़प।

लक्ष्मी नौ बार अमेरिका जा चुकी है। हिजड़ों के मानवीय मूलभूत अधिकारों को लेकर संघर्षरत है। अमेरिका की नागरिक बनकर रह सकती है। पर वह कहती है— "मैं भारत छोड़कर जी नहीं सकती! जिस देश की ज़मीन पर आप जन्म लेते हैं, उसके प्रति आप क्या महसूस करते हैं? राष्ट्रप्रेम एक भावना है, उसका संबंध हृदय से है। लिंग से नहीं।"

अचानक लक्ष्मी कहती है, "मैं अपने ब्वायफ्रेंड को बुलाती हूं। दो बच्चों के पिता 'कैंसर' के लिए काम करने वाले गोल्डन एन.जी.ओ. के चेयरपर्सन 'दीपचंद'।" मैं इस खूबसूरत नौजवान को लक्ष्मी के पास बैठते हुए पाती हूं। बेहद सहजता और आत्मीयता के साथ। दो पुरुषों को उनके बीच एक स्त्री-पुरुष के धरातल पर पनपे प्रेम की स्पष्ट स्वीकारोक्ति के साथ इतने नज़दीक से पहली बार देख रही हूं।

लक्ष्मी पारदर्शी है। नैतिक है, बेहद ज़िम्मेदार भी। वह अपने परिवार में बड़े पुत्र का दायित्व निभाती है। लक्ष्मी समाज का सुयोग्य नागरिक है।

एक दिन के अंतराल पर पुनः लक्ष्मी से मिलने जाती हूं, लक्ष्मी के घर पर। शरीर पर बस बनियान और तौलिया।

बाल पीछे की ओर बंधे हुए। मेकअप विहीन चेहरा-उसका अपना चेहरा। मैं निर्निमेष उसकी तरफ देखती रह जाती हूं। मैं और मेरे भीतर की स्त्री भी उसे देख रही है। सिस्टरहुड के भाव से भीगा स्त्री मन और पुरुष तन देख रही हूं। अर्द्धनारीश्वर का मिथ मेरे सामने मूर्त और साकार था शिव का यह रूप कहीं...? लक्ष्मी अपने पुरुष रूप में भी उतनी ही आकर्षक है। लक्ष्मी की मां और लक्ष्मी के कुछ शिष्य भी वहां मौजूद हैं। मेरे मुंह से बेसाख्ता गाली निकल पड़ी। "पागल, बेवकूफ, नालायक, हिजड़ा होने की क्या ज़रूरत थी? बिना हिजड़ा हुए भी हिजड़ों के लिए काम किया जा सकता था।" मैंने मां से कहा— "शादी करो इसकी।" लक्ष्मी की आंखें हंसी थीं। फिर उसके होंठों से शरारत बुलबुले की तरह फूटी। "तुम तैयार हो तो बोलो।"

लक्ष्मी अब तक सफल कोरियोग्राफर बन चुकी थी। इसी समय उसकी मुलाकात शबीना नामक हिजड़े से हुई। सी.एस.टी. स्टेशन पर शबीना को भूख लगी थी लक्ष्मी ने कहा, "चलो यहां के होटल में कुछ खाते हैं।" शबीना सहम गई— मैं इतने बड़े होटल में तुम्हारे साथ कैसे बैठ सकती हूं? लक्ष्मी के भीतर का बुद्ध रो पड़ा— "अरे, तुम खैरात में नहीं खाओगी। मूल्य चुकाने वाला केवल उपभोक्ता और ग्राहक होता है, समझी तुम।" एक कलाकार की कला की बुनियाद उसकी संवेदनशीलता ही होती है। अचानक लक्ष्मी के भीतर का द्रव्य पदार्थ ठोस शक्ल लेने लगा। उसने शक्ति की इस कसमसाहट और चेतना को महसूस किया। लक्ष्मी कोरियोग्राफर था। मॉडल कोऑर्डिनेटर था। इसका 'लावणी डांस ऑफ़ फायर' महाराष्ट्र में धूम मचा चुका था। आत्मविश्वास से लक्ष्मी कहती है, "मैं बिंदास होती गई, बेफिक्र और बेपरवाह नहीं।" मैंने संकल्प लिया कि आजन्म हिजड़ों के मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्ष करूंगी।"

लक्ष्मी ने हिजड़ा समुदाय में शामिल होने का निर्णय लिया। शबीना के द्वारा बताए गए पते पर पहुंची। वह शबीना को अपना गुरु मान चुकी थी। शबीना की गुरु लता और उनके चेले भायखल्ला कंपाउंड में थे। लक्ष्मी ने पहुंचते ही कहा, "मुझे हिजड़ा होना है, कितनी फीस लगेगी?" हिजड़ों का दरबार हंस पड़ा। यहां एडमिशन फीस नहीं लगती। गुरु ने देखा फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलने वाला स्टाइलिश लड़का। उनके मुंह से निकला, "असा स्टाइलिश मुलगा हिजड़ा होणार कसा साठी?" लेकिन लता की गुरु ने लक्ष्मी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। जोग जनम की साड़ी देकर दुपट्टा डालकर विधिवत लक्ष्मी को हिजड़ा समुदाय का सदस्य बना लिया गया। लता ने कहा— तुम जैसे रहती हो वैसे ही रहो, तुम्हारे ऊपर कपड़ों का कोई बंधन नहीं। हिजड़ा समुदाय ने अपने सिद्धांत को लक्ष्मी के लिए लचीला रखा। लता के प्यार और प्रेरणा ने लक्ष्मी की रूहानी ताकत को मज़बूत किया।

इस समुदाय में जब तक गुरु ज़िंदा रहता है, तब तक चेले सुहागन माने जाते हैं। गुरु की मृत्यु के पश्चात चालीस दिन का वैधव्य पालना होता है, सफेद कपड़े पहनना ज़रूरी है। हिजड़ा समुदाय में 'टू व्हीलर' चलाना मना है। लेकिन लक्ष्मी चलाती है। 'जोग जनम' की साड़ी ओढ़कर 'लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी उर्फ राजू' उस अंग समेत जिसे लेकर पुरुष प्रधान समाज अहंकार में डूबा रहता है हिजड़ा समुदाय में शामिल हो गया। सदमा लिंग व लिंगविहीन दोनों समुदायों में था। पर लक्ष्मी के माथे से तनाव की लकीरें मिट गई थीं, लक्ष्मी कहती है, "मैं मुद्दत बाद ऐसी गहरी नींद में सोई जिससे रश्क किया जा सके। मैं इसी दिशा में अपनी पहचान और अपनी हैसियत बनाऊंगी। वही किया, फिर भी कभी-कभी तड़प भरी उदासी भीतर भरती है। मुझे लगता है जीवन की लय तो हाथ लगती नहीं, बस नाटक किए जाओ जीने का।" लक्ष्मी खूब पढ़ती है। खूब सोचती है। वह खुद चिंतन की एक धार है। धीरे-धीरे बोलने लगी— "जो लोग मुझे चिढ़ाते थे, वे ही लोग मेरे शरीर को भोगने की इच्छा रखते थे। पुरुष को किसी भी चीज़ में यदि स्त्रीत्व का आभास मात्र हो जाए, वह उसे अपने कदमों में लाने के लिए पूरी ताकत लगा देता है।"

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी अब एक नई दुनिया का बाशिंदा था। घर का बड़ा बेटा, कॉलेज का होनहार छात्र,मॉडल कोऑर्डिनेटर, अपनी नई दुनिया में कमर में साड़ी बांध चुका था। नृत्यांगना तो थी ही। लक्ष्मी बार डांसर बन गई। इसका पता न कॉलेज में था न घर में। इस समय वह दाई वेलफेअर संस्था की पीअर एज्युकेटर थी। लक्ष्मी का मानना था कि यह संस्था बहुत अच्छा काम कर रही है। वह पीअर एज्युकेटर दाई वेलफेअर की अध्यक्षा बनी। हिजड़ों की यह संस्था उनके मूलभूत अधिकारों और उनके प्रति होने

वाले अन्यायों के प्रतिकार के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ खड़ी हो गई।

लक्ष्मी की पहचान एक सोशल एक्टिविस्ट के रूप में बनने लगी थी। वह अपने कामों के प्रति समर्पित कार्यकर्ता थी। समाज में उसकी छवि और पहचान, हिजड़े की हो चुकी भी। लेकिन घर में अब तक कुछ पता नहीं था। घर में पता चला। सरयूपारी ब्राह्मण का ज्येष्ठ पुत्र हिजड़ा हो गया। न जाना, न सुना, न देखा, कुदरत का ऐसा खेल।

लक्ष्मी के लिए नाजुक क्षण था। पूरी दुनिया उससे छिनने वाली थी। सारे रिश्तेदारों का दबाव 'तोड़ो रिश्ता लक्ष्मी से' मां-बाप पर लाठी बनकर बरस रहा था।

एक अंतराल के बाद लक्ष्मी की पारिवारिक दशा सामान्य हुई। मां-बाप ने जाति-समाज की अपेक्षा लक्ष्मी को महत्व दिया। यही लक्ष्मी का सबसे बड़ा संबल था। परिवार के लिए वह राजू था। छोटे भाई-बहनों की तकलीफें दूर करता, मां-पिता का खयाल रखता। एक डेवलपमेंट प्रोग्राम का अपना प्रपोजल प्रजेंट करने के लिए 'दाई' को भी निमंत्रित किया गया। लक्ष्मी ने वहां पहुंचकर देखा कि वहां उसके 'बार' का एक ग्राहक भी पहुंचा हुआ था जो लक्ष्मी को वहां देखकर हैरान हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को अनदेखा किया। जब उसने लक्ष्मी का धाराप्रवाह अंग्रेज़ी में प्रजेंटेशन देखा तो सकते में आ गया। इधर लक्ष्मी ने तय किया कि आज से, अभी से 'बार में नाचना बंद।' लक्ष्मी को अब हिजड़ों के प्रतिनिधित्व हेतु विदेशों में कॉन्फ्रेंस इत्यादि में बुलाया जाने लगा। 'एक्स डाई इंडिया फेस्टिवल' में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए लक्ष्मी पहली बार यूरोप गई। वहां इतना सम्मान मिला कि उसकी याद से अब भी लक्ष्मी गर्व से भर उठती है। उसकी कला, उसके लोकनृत्य पर वहां के लोग मुग्ध थे। दूसरों के (हिजड़ों) मूलभूत अधिकारों के लिए लड़ने वाले कटिबद्ध इस योद्धा के प्रति प्रेम विश्व स्तर पर संचरण होने लगा। लक्ष्मी ने 'एड्स कंट्रोल सोसायटी' के माध्यम से सेक्स वर्करों के लिए काम करना शुरू किया।

लक्ष्मी को उ.प्र. का एक विशिष्ट पुरस्कार मिला। लक्ष्मी कहती है, "जानती हो अब तक यह पुरस्कार केवल पुरुषों को मिला है, एक मैं किन्नर, इन्होंने किसी भी 'स्त्री' को इस लायक नहीं समझा।" भेदभाव की बात करते हुए लक्ष्मी बेहद व्यथित होती है। घायल हिजड़ों, बीमार हिजड़ों के साथ हॉस्पिटल में भेदभाव किया जाता है। पुलिस चौकी में उनके साथ हुई दुर्घटना को दर्ज तक नहीं किया जाता। स्वयं लक्ष्मी के साथ दो बार बलात्कार करने की कोशिश की गई। 'थाने' ज़िले में अब भेदभाव खत्म हुआ। लक्ष्मी की वजह से। लक्ष्मी एक बार की घटना बताती है— "मैं मुंबई से पुणे जा रही थी, एक्सप्रेस हाइवे (पुणे के नज़दीक) पर एक गाय का एक्सीडेंट हो गया। कोई उस तरफ ध्यान नहीं दे रहा था गाय की हालत देखकर कलेजा मुंह को आ गया। मैं गाड़ी से उतर पड़ी। उन गाड़ियों की लंबी कतार में एक विधायक की गाड़ी भी थी। मुझे लगा ये लोग गाय को इधर-उधर सरकाकर भागने की फिराक में हैं। फिर मैंने भी दिखाया हिजड़पन। पकड़ा विधायक को कहा, जब तक यहां एम्बुलेंस नहीं आएगी, इसे हॉस्पिटल नहीं भेजा जाएगा, एक भी गाड़ी यहां से निकलने नहीं दूंगी समझे?"

लक्ष्मी के भीतर प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति के लिए छटपटाहट है। वह कहती है कि हिजड़ा, देवदासी, जोगता, आदिवासी के विकास के लिए अलग से पंचवर्षीय योजनाएं बननी चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार इसे अहम त्रिसूत्री कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए और कठोरता से कार्यान्वयन होना चाहिए।

अपने एक इंटरव्यू में लक्ष्मी ने प्रतिप्रश्न किया— "मनुष्यता के तकाज़े पर आप हमें अपने समाज में शामिल क्यों नहीं करते?" जवाब मिला— "अनप्रोडेक्टिव हो इसलिए।" लक्ष्मी ने कहा— "अच्छा, समाज में कितनी स्त्रियां बांझ, कितने पुरुष नपुंसक होते हैं, उनका आप क्या करते हो? हिजड़ों के पास बुद्धि नहीं होती? उनके पास प्रतिभा नहीं होती? बल नहीं होता? वह राजनीति में नहीं जा सकते? फौज में नहीं जा सकते? इन बातों को किन तर्कों के आधार पर तय किया? आपने कलाकारों, प्रतिभावानों को मजबूर कर दिया पचास-पचास रुपए में देह बेचने को, ताली बजाने को। आप अपनी मानवता पर गर्वित भी होते हैं।" वातावरण बोझिल हो उठा है। सारे चुप।

क्या चाहती हो तुम लक्ष्मी? "बस इतना ही कि कल को किन्नरों को देखकर किसी की भवें न तनें। मुख्य समाज और इस समाज के बीच का रिश्ता भय का न हो। कुछ बहुरूपियों को ही हिजड़ा समाज का सच न माना जाए।"

सामार: हंस-अंक दिसम्बर 2010